“जय भारत”

वैद्य सुरेश चतुर्वेदी, आयुर्वेदाचार्य,

आ सिंधु - सिंधु पर्यता, यस्य भारत भूमिका, पित्रभूः पुण्यभूश्चैव, सर्वेहिः रिचिस्मृता |

अर्थात्, सिन्धू नदी से लेकर हिन्दमहासागर (कन्याकुमारी) के समुद्र तल का देश भारत है और यहॉ के निवासीयों कि यह मातृभूमी और पुण्यभूमी भी है |

इसी संदर्भ में और भी कहा गया है कि

हिमालयम् समारम्य, यावदिन्दु सरोवरम् | तं देव निर्मितम् देशम् हिन्दुस्थानम् प्रचक्षते |

अर्थात् हिमालय से लेकर इन्दू यानि हिन्दमहासागर (कन्याकुमारी) तक विस्तारित देश का निर्माण देवताओं ने किया है जो कि आज हिन्दुस्थान के रूप जाना जाता हैं |

इस देश की भौगोलिक स्थिती विश्व में निराली है | यहॉ पहाड़, नदी, रेगिस्तान, हरी - भरी , शस्य श्यामल भूमी है |

सृष्टी की अनेक विधाओं में जलचर, थलचर, नभचर प्राणियों का उद्गम हुआ तथा मानव शरीर का अभ्युदय भी ब्रहमाजी ने यही पर किया है |

इस देश की अनेक विशेषताओं मे से यह प्राकृतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर पर अभी भी स्थित है |

वेद पुराण , उपनिषद , गीता आदि का ज्ञान यहॉ अभी भी सुरक्षित है |

इन्ही ज्ञानपुजों मे से आयुर्वेद का ज्ञान और एक अद्भूत विज्ञान रूप दुनिया के समक्ष उत्पन्न हुआ है |

इसी लिये मनुस्मृती मे कहॉ गया है |

एतद् देश प्रसूतस्य, स्व स्व चरित्रम् शिक्षेरन्, पृथ्वी , वायु सर्व मानवाः |

अर्थात्, यही से विश्व के समस्त मानव समाज ने ज्ञान - विज्ञान प्राप्त कर विभिन्न क्षेत्रो में प्रसारित किया है |

आयुर्वेद के विषय में शास्त्रकारों ने लिखा है, कि ब्रहमास्मृत्वा आयुर्वेद है और अनेक ऋषि मुनिओं के परमार्श से इस विज्ञान का प्रचार और प्रसार हुआ |

अग्निवेद भेल, क्षारपाणि आदि अपनी तपस्या साधना से प्राप्त ज्ञान से प्राणि मात्रा के कल्याण के लिये कार्य किया अर्थात्

शरीर माध्याम् खलु धर्म साधनम

अर्थात शरीर की रक्षा करना यह जीवन का मुख्य उद्देश्य है तथा

धर्माथ काममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् च.सु.१/१५

उत्तम आरोग्य चतुर्विद्ध पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्ति का मुल है | इतना ही नहीं अपितु इन्दियॉ, मन और आत्मा की प्रसन्नता ही पूर्ण आरोग्य कहलाती है |

“ना लाभार्थम् नापि कामार्थम् अपिभूत दयाम् प्रति ः

केवल अर्थ के लिये नही अपितु प्राणिमात्र के स्वास्थ्य संरक्षण हेतु आयुर्वेद निर्दिष्ट किया गया हैं |

इसीलिए पशुओं , पक्षीओं और वृक्ष वनस्पतीयों के संरक्षण के लिये भेल, यशोधर, पालकाव्य, राघवभट्ट आादि ने ग्रंथ लिखे हैं |

अतः आयुर्वेद का अवतरण निम्नलिखित उद्देश्य के लिये हुआ कि

“स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम आतुराणां रोगप्रशमनम् |”

अर्थात स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा आतुर के रोग का निवारण करना ही आयुर्वेद मुख्य उददेश्य है |

इतना ही नहीं अपितु हमारे वैदिक शांति पाठ में कहा गया है कि

ॐ द्यौ शान्तीः अंतरीक्ष शांतीः पृथ्वी शांतीः आपः शांतीः
औषधः शांतीः वनस्पत्यः शांतीः विश्ववेदाः शांतीः ब्रम्हा शांतीः
सर्वध्वम् शांतीः शांतीरेवा शांतीः सामा शांतीरेधीः
ॐ शांतीः शांतीः शांतीः

इस मंत्र में पंचमहाभूत, पंचतत्व, वनस्पतिया एवं समस्त संसार की शांति की कामना की गयी है |

इसके अतिरक्ति विश्व कल्यान के लिये कहा गया

सर्वेभवन्तुं सुखीनः सर्वे सन्तु निरामयाः |
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु भा कश्चित दुख भागभवेत् | |

अर्थात् संसार के समस्त प्राणी सुखी रहे किसी को रोग न हो सब सभी के कल्याण की कामना करें और कोई दुःख का भागी न बने |

यह सर्व कल्याण की भावना का क्षेत्र भारत है यही इसकी विशेषता है इसीलिये इसे सभी धर्म का प्रणेता आदि गुरू माना जाता है और सभी का "भारत भाग्य विधाता" भी कहा जाता है |

४८, महंत रोड
विलेपार्ले पूर्व
मुबई ४०००५७

ØØØ